B.A. (HISTORY)
SEMESTER-III
PAPER-I, HISTORY OF MODERN INDIA (1740-1857)

Advent of European Powers :
(यूरोपीय शक्तियों का आगमन)

प्राचीन काल से ही भारत का विदेशों से व्यापारिक एवं राजनैतिक सम्बन्ध रहा है। व्यापार के मुख्यतः दो मार्ग थे–स्थल एवं समुद्री मार्ग। अरबों द्वारा कुस्तुन्तनिया पर अधिकार करने के पश्चात, यूरोपियन का भारत से स्थल मार्ग अवरूद्ध हो गया, इसलिए यूरोपियन ने भारत से व्यापार के लिए समुद्री मार्ग की खोज की। इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण घटना भी 17 मई 1498 को वास्कोडिगामा नामक पुर्तगाली नाविक का उत्तमाशा अन्तरीप होते हुए कालीकट पहुँचना। कालीकट के शासक जमोरिन ने इस उत्साही नाविक का स्वागत किया तथा उसे व्यापारिक सुविधाएं प्रदान की।

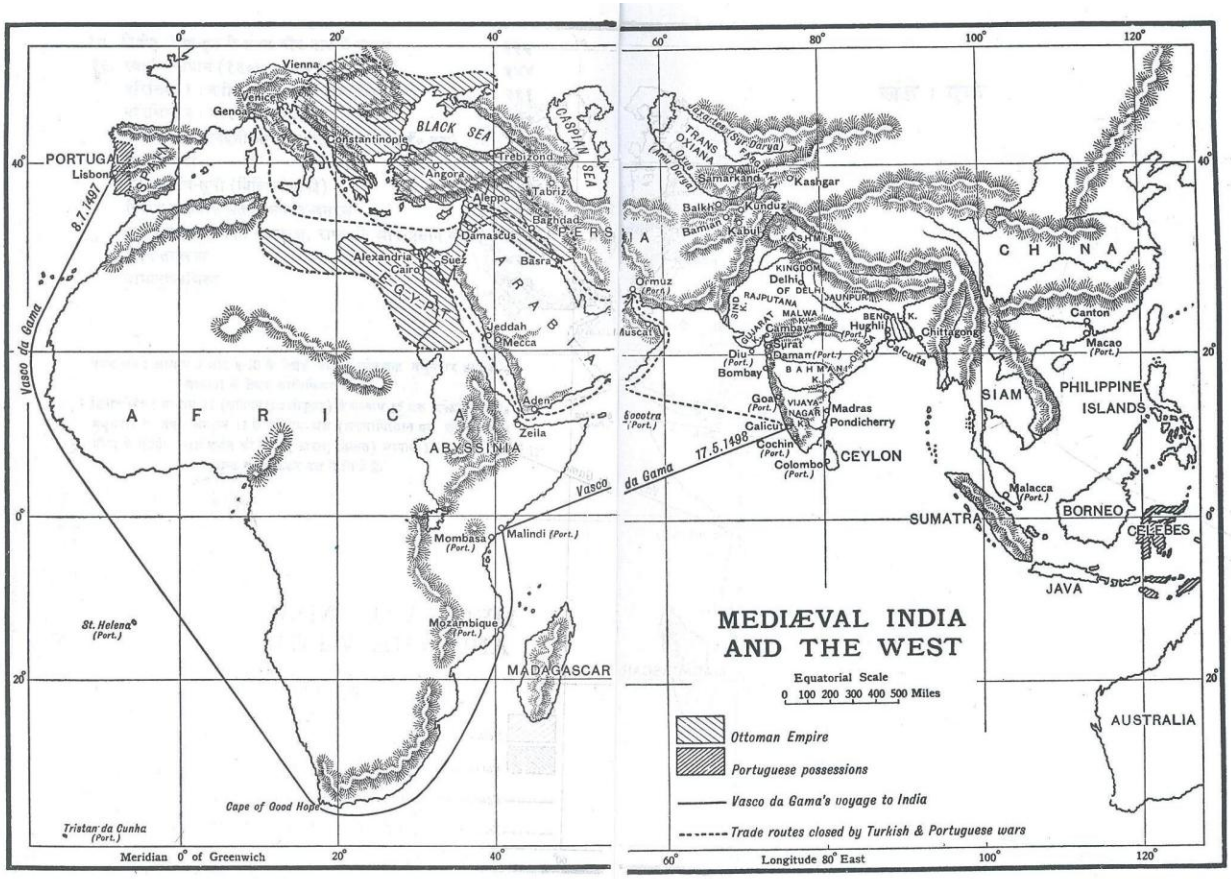

डॉ0 वन्दना कलहंस (एसो0 प्रोफेसर), विभाग–इतिहास
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कॉलेज, लखनऊ।

भारत में यूरोपियों के आने का वास्तविक क्रम

1. पुर्तगाली (1498 ई0)
2. डच (1602 ई0)
3. अंग्रेज (1607 ई0)
4. डेनिश (1616 ई0)
5. फ्रॉसीसी (1665 ई0)

पुर्तगाली (**Portuguese**)

फ्रांसिस्को–डी–अल्मीडा (**Fransisco-de-Almeida : 1505-1509**)

- फ्रासिस्को–डी–अल्मीडा भारत का प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था।
- इस पद पर वह 1505 ई0 से 1509 ई0 तक रहा।
- अल्मीडा ने भारत में शान्ति पूर्वक व्यापार करने की नीति अपनायी जिसे ''ब्लूवाटर पॉलिसी'' (**Blue Water Policy**) शान्त जल की नीति कहा गया।

अल्फांसो–डी–अब्लुकर्क (**Albuquergue 1509 - 1515** ई0)

- भारत में अल्बुकर्क पुर्तगाली सम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था।
- अल्बुकर्क ने अपने क्षेत्र में ''सती प्रथा'' बन्द करवाई।
- पुर्तगालियों को भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- उसने कोचीन को अपना मुख्यालय बनाया।
- नवम्बर 1510 उसने गोवा के समृद्ध बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया। यह बन्दरगाह बीजापुर के सुल्तान युसूफ आदिलशाह के अधिपत्य में था।
- अल्बुकर्क की मृत्यु 1515 ई0 में भारत में हुई।

नीनू डी कुन्हा (1529 – 1538)

- कुन्हा ने 1530 ई0 में सरकारी कार्यालय कोचीन से गोवा स्थान्तरित कर दिया।
- इस प्रकार गोवा भारत में पुर्तगाली राज्य की औपचारिक राजधानी बन गया।

डॉ0 वन्दना कलहंस (एसो0 प्रोफेसर), विभाग–इतिहास
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कॉलेज, लखनऊ।

कार्टज–अर्मेडा–काफिला व्यवस्था (**Cartaz-Armeda Cafila System**):–

- इस व्यवस्था का जन्मदाता पुर्तगीज वायसराय कैस्ट्रो था।
- अपनी काट्र्ज–अर्मिडा–काफिला व्यवस्था (Cartaz-Armeda Cafila System) द्वारा उन्होंने एशियाई व्यापार पर गहरा प्रभाव डाला। पुर्तगाली स्वयं को ''सागर का स्वामी'' (Lord of Ocean) कहते थे।
- कोई भी भारतीय या अरबी जहाज पुर्तगाली अधिकारियों से कार्टज (परमिट) लिये बिना अरब सागर नहीं जा सकता थे।
- मुगल सम्राट अकबर ने पुर्तगालियों से प्रतिवर्ष एक निःशुल्क कार्टज प्राप्त करके एक प्रकार से उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया, पुर्तगालियों का हिन्द महासागर पर 1595 ई0 तक एकाधिकार बना रहा।

पुर्तगाली आधिपत्य का परिणामः–

- हिन्द महासागर में पुर्तगाली नियंत्रण के कतिपय महत्वपूर्ण धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक परिणाम हुए।
- पुर्तगालियों को भारत का जापान के साथ व्यापार प्रारम्भ करने का श्रेय दिया जाता है, वहॉ से तॉबा और चॉदी प्राप्त होती थी।
- पुर्तगाली मध्य अमेरिका से तम्बाकू, आलू, मक्का भारत लाये, उन्होंने भारत में प्रिन्टिग प्रेस (छपाई) की शुरूवात की। अनन्नाश, पपीता, बादाम, काजू, मूंगफली, शकरकन्द, कालीमिर्च, लीची और सन्तरा पुर्तगालियों की ही देन रही, जिन्हें उन्होंने विभिन्न देशों से प्राप्त किया था। 1961 ई0 तक पुर्तगालियों का गोवा दमन और दीव पर अधिकार रहा।

डच (**Dutch**)

- पुर्तगालियों के बाद डच भारत आये। डच नीदरलैण्ड या हालैण्ड के निवासी थे।
- 1595–96 ई0 में ''कार्नेलियन हाउटमैन'' के नेतृत्व में पहला डच अभियान दल भारत के पूर्व सुमात्रा पहुँचा।
- 1602 ई0 में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी (यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड) की स्थापना की गयी।
- डच लोगों का कार्यक्षेत्र ''केप आफ गुडहोप'' के पूर्व या जिसका पूर्वी केन्द्र बैटावियाँ में स्थित था।

<u>भारत में डचों द्वारा स्थापित फैक्ट्रियॉ</u>:–

मसूली पट्टम	1605 ई0
पुलीकट	1610 ई0
सूरत	1616 ई0
विमलीपट्टम	1641 ई0
करिकाल	1645 ई0
चिनसुरा	1653 ई0
कोचीन	1663 ई0
कासिम बाजार पटना–बालासोर	1658 ई0

डॉ0 वन्दना कलहंस (एसो0 प्रोफेसर), विभाग–इतिहास
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कॉलेज, लखनऊ।

डचों ने भारतीय कपड़ों के निर्यात को प्रोत्साहित किया। डच लोग कपड़े को कोरोमण्डल तट, बंगाल और गुजरात से निर्यात करते थे। यद्यपि ये लोग भारत से नील शोरा, कालीमिर्च आदि का भी निर्यात करते थे।

पैगौड़ा डचों द्वारा जारी स्वर्ण सिक्के थे।

सूरत स्थित डच व्यापार निदेशालय सर्वाधिक लाभ कमाने वाला प्रतिष्ठान था। डच कम्पनी ने कासिम बाजार में रेशम की चक्री उद्योग लगाया, जिससे भारत में प्रथम बार औद्योगिक वेतन भोगी रखे गये। 1759 ई0 बेदरा के युद्ध (बंगाल) में डच अंग्रेजों से पराजित हुए और भारत से उनकी व्यापारिक, राजनैतिक शक्ति सदा के लिए समाप्त हो गयी।

अंग्रेज (**English**)

1599 ई0 में पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने के लिए अंग्रेजों ने एक कम्पनी की स्थापना की, जिसका नाम ''गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट्स ऑफ लन्दन ट्रेडिंग इन दू द ईस्ट इण्डीज'' था। 31 दिसम्बर 1600 ई0 में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने एक शाही फरमान देकर इस कम्पनी को 15 वर्षों के लिए पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।

1603 ई0 में एलिजाबेथ प्रथम की मृत्यु हो गयी, अब ब्रिटेन के शासक जेम्स प्रथम हुए, उन्होंने 1608 में अपने दूत कैप्टन हाकिन्स को हेक्टर नामक जहाज से भारत में व्यापारिक सुविधा प्राप्त करने हेतु भारत भेजा, जहॉ से हाकिन्स सूरत के बन्दरगाह पर उतरे। हाकिन्स जेम्स प्रथम का पत्र जो अकबर के नाम से था, लेकर आगरा पहुँचे, किन्तु 1605 में अकबर की मृत्यु हो चुकी थी। अब मुगल बादशाह जहाँगीर थे, उन्होंने बादशाह को जेम्स प्रथम का पत्र दिया। पत्र का नाम फ्रेन्ड (Friend) था। पत्र की भाषा फारसी थी। हाकिन्स तुर्की भाषाओं का ज्ञाता था। हाकिन्स ने अंग्रेजों के लिए सूरत में फैक्ट्री खोलने की अनुमति माँगी। जहाँगीर ने उसकी माँग को मान लिया और 1608 में उन्होंने सूरत में फैक्ट्री डाल दी। किन्तु वहाँ के सौदागरों के विरोध के कारण उन्हें वहाँ से छोड़ना पड़ा। अब अंग्रेजों ने 1611 ई0 में मसूली पट्टम में फैक्ट्री डाली, इसके बाद उन्होंने पुनः 1613 में सूरत में फैक्ट्री डाली।

- इसी बीच पुनः जेम्स प्रथम का पत्र लेकर जहाँगीर के दरबार में सर टामस रो 1615 ई0 में आये। टामस रो 18 सितम्बर 1615 को सूरत बन्दरगाह पर उतरे और 10 जनवरी 1616 को अजमेर में जहॉगीर को पत्र भेंट किया, इस पत्र का नाम था–''परफेक्ट'' (Perfect)।
- 1632 में गोलकुण्डा ने अंग्रेजों को एक ''सुनहला फरमान'' (Golden Farman) दिया, जिसके अनुसार अंग्रेज सुल्तान को 500 पैगोड़ा वार्षिक देंगे।
- 1661 ई0 में पुर्तगाली राजकुमारी कैमरीन ब्रेगेन्जा एवं ब्रिटेन के राजकुमार चार्ल्स द्वितीय का विवाह हुआ। इस अवसर पर दहेज के रूप में पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय को ''बम्बई'' प्रदान किया। 1668 ई0 में चार्ल्स द्वितीय ने बम्बई को 10 पौण्ड वार्षिक किराये के बदले ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया।
- 1688 ई0 में सरजॉन चाइल्ड ने बम्बई एवं पश्चिमी समुद्री तट के मुगल बन्दरगाहों पर घेरा डाला। इस समय मुगल बादशाह औरंगजेब थे, उन्होंने अंग्रेजों को खदेड़ दिया।
- सरजान चाइल्ड ने औरंगजेब से मॉफी मांगी और हरजाने के तौर पर 1.5 लाख रूपये दिये। इसके बदले औरंगजेब ने व्यापार हेतु एक पत्र दिया था। 1833 ई0 के चार्टर एक्ट द्वारा कम्पनी का संक्षिप्त नामकरण किया गया।

डॉ0 वन्दना कलहंस (एसो0 प्रोफेसर), विभाग–इतिहास
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कॉलेज, लखनऊ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीः–

1715 ई0 में जान सरमन के नेतृत्व में एक मिशन भारत आया। इस समय मुगल बादशाह फर्रूखसियर थे, उन्होंने 1717 ई0 में एक फरमान निकाला। इस फरमान को ''कम्पनी का मैग्नाकार्टा'' कहते हैं। इससे अंग्रेजों को 3 हजार रूपये वार्षिक के बदले में मुफ्त व्यापार करने की स्वतंत्रता मिल गयी तथा कम्पनी अब अपने सिक्कों को सम्पूर्ण मुगल क्षेत्र में चला सकती थी एवं 10000 रूपये वार्षिक देने पर कम्पनी को सूरत में अन्य कोई कर नहीं देना पड़ता था।

क्र0सं0	भारत में अंग्रेजी फैक्ट्री	स्थापना वर्ष
1.	मसूली पट्टम	1611
2.	सूरत	1613
3.	आमिगॉव	1626
4.	हरिहरपुर	1633
5.	बालाशोर	1633
6.	मद्रास (कोर्टसेन्ट जार्ज)	1639
7.	हुगली	1651
8.	सुतानती	1690
9.	कोर्ट विलियम (बंगाल)	1696

डेनिश या डेन कम्पनी

अंग्रेजों के बाद भारत में डेनिश व्यापारी 1616 ई0 में आये। इन्होंने अपनी प्रथम फैक्ट्री 1620 में तंजौर के ट्रांकेवर में स्थापित की एवं 1676 में इन्होंने सीरमपुर (बंगाल) में अपनी दूसरी फैक्ट्री स्थापित की। इन्होंने भारत में लगभग 25 वर्षों तक व्यापार किया, परन्तु अंग्रेजी प्रतिद्वन्द्विता एवं कूटनीतिक चालों के आगे डेनिश व्यापारी टिक नहीं सके और इनके व्यापार में लागातार गिरावट होने के कारण 1745 में इन्होंने अपनी सभी भारतीय फैक्ट्रियों को अंग्रेज कम्पनी के हाथों औने–पौने दामों में बेच दिया और भारत से चले गये।

डॉ0 वन्दना कलहंस (एसो0 प्रोफेसर), विभाग–इतिहास
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कॉलेज, लखनऊ।

फ्रांसीसी (**French**)

फ्रांस में राजशाही व्यवस्था थी। फ्रांस के सम्राट जुई चौदहवे के समय उनके मंत्री कोलबर्ट के प्रयासों से 1664 ई0 में एक फ्रांसीसी व्यापारिक कम्पनी की स्थापना हुई जिसका नाम कम्पनी द इण्ड ओरिएण्टल था, जिसका सारा खर्च वहाँ की सरकार वहन कर रही थी। फ्रांस से एक दूसरा दल 1667 ई0 में चला, इसका नायक फ्रैंकोकैरो था। इसके साथ इस्फहान का निवासी मरकारा भी था। भारत में फ्रांसीसी की पहली कोठी फ्रैंकोकैरो द्वारा 1668 ई0 में सूरत में स्थापित हुई। मरकारा गोलकुण्डा के सुल्तान से एक अधिकार पत्र प्राप्त कर 1669 ई0 में मसूलीपट्टम में दूसरी फ्रांसीसी कोठी स्थापित करने में सफल हुआ। 1673 ई0में मसूलीपट्टम के निदेशक फ्रंसिस मार्टिन ने वालिकोण्डपुरम के सूबेदार शेर खॉ लोदी से फैक्ट्री स्थापना के लिए भूमि प्राप्त की। यहीं पर फ्रांसिस मार्टिन ने पांडिचेरी की एतिहासिक स्थापना की।

1674 ई0 में बंगाल के सूबेदार शाइस्ता खॉ ने फ्रांसिसियों को भूमि प्रदान की जिस पर उन्होंने चन्द्रनगर की कोठी स्थापित की। जून 1720 ई0 में फ्रांसीसी कम्पनी का इण्डीज की चिर स्थायी कम्पनी के रूप में पुनः निर्माण हुआ, तब 1720 ई0 और 1742 ई0 के बीच लिनो और ड्यूमा के बुद्धिमतापूर्ण शासन में समृद्धि इनके पास लौट आई। फ्रांसीसियों ने 1721 ई0 में मारीशस, 1725 ई0 में मालाबार समुद्र तट पर स्थित माही और 1739 ई0 में कारीकल पर कब्जा कर लिया। पांडिचेरी को फ्रांसीसी बस्तियों का मुख्यालय बनाया गया और फ्रैंको मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का महानिदेशक बनाया गया। फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले (Dupley)के समय में फ्रांसीसी प्रभुत्व की स्थापना हुई।

डॉ0 वन्दना कलहंस (एसो0 प्रोफेसर), विभाग–इतिहास
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कॉलेज, लखनऊ।